Chapter-8

अष्टम अध्याय

(राष्ट्रीय चेतना के विशेष संदर्भ में द्विवेदी जी का बाल-साहित्य)

द्विवेदी जी की जीवनी की रूपरेखा खींचते हुए विगत तृतीय अध्याय के अंतर्गत यह निर्दिष्ट किया जा चुका है कि द्विवेदी जी कवि के उपरान्त सफल संपादक भी रहे हैं। 'अधिकार' के अतिरिक्त 'बालसखा' का सम्पादन भी उन्होंने इंडियन प्रेस, प्रयाग से ग्यारह वर्ष की सुदीर्घ कालावधि तक किया। 'बालसखा' को द्विवेदी जी ने किस तरह नवीन रूप प्रदान करते हुए शिक्षाविदों, बाल-साहित्यकारों एवं अन्य पाठकों को आकर्षित किया, इसका उल्लेख किया जा चुका है। सम्पादन के उपरान्त स्वयं द्विवेदी जी भी बाल-साहित्य सर्जन में रुचि लेते रहे हैं। श्री नर्मदाप्रसाद खरे के साथ पत्राचार करते हुए स्वयं द्विवेदी जी ने ~~भी बाल-सर्जन में रुचि लेते रहे हैं-~~ लिखा था कि 'सभी तो बच्चों के लिए लिख रहे हैं, किसी को तो नन्हें-मुन्नों के लिए, बालकों के लिए, किशोरों के लिए, तरुणों के लिए लिखना चाहिए। इसी उद्देश्य को समक्ष रखकर मैंने बाल-साहित्य में ही विशेषरूप से अपने ध्यान को केन्द्रित किया था। और मानता हूँ, जो कुछ भी लिखा है मैंने, वह सभी बाल-साहित्य है। 'युगावतार' कविता 7-8 कक्षा के छात्रों की पाठ्य-पुस्तकों में है, तब सभी कविताएं बालकों के लिए ही तो हैं।'[1]

सामान्यत: हिन्दी के अनेक साहित्यकार बालोपयोगी साहित्य-सर्जन करने में अपने लाघव की अनुभूति करते रहे हैं। किन्तु यह उनकी निजी भ्रान्त धारणा एवं संकोच ही माना जाना चाहिए। वस्तुत: बच्चों के लिए काव्य-सृजन करना इतना सरल नहीं है। बाल-साहित्य सृजन की कठिनाई के सन्दर्भ में पं0 भगवतीप्रसाद वाजपेयी लिखते हैं, 'बाल-साहित्य लिखना बड़ा ही कठिन कार्य है। भाषा क्लिष्ट हो जाय तो लेखक को अपनी कुर्सी छोड़नी पड़े। भावों में स्वाभाविक सारल्य न हो, अभिव्यंजना में भोलापन न झलक पडे तो लेखक केवल कलाकार ही नहीं घसियारा बन जायगा। इन दोनों गुणों में पारंगत होने पर भी यदि कथन में नयी पौध के नव-निर्माण की भावना न हुई तो भी लेखक का प्रयास सर्वथा सफल और चिरस्थायी न होकर कालान्तर में तीन कौड़ी का बन जाता है।'[2]

उपर्युक्त वक्तव्य का तात्पर्य यह है कि बालकों के हृदय की गहराई में उतरकर जब तक कवि उनके सहज स्वभाव से तादात्म्य स्थापित नहीं करता तब तक वह उनके लिए सच्ची कविता का सृजन नहीं कर सकता । बालक की-सी निष्कपट सरलता एवं सहज भोलापन जिस कवि की प्रातिभ विशेषता हो, वही बालोपयोगी काव्य-सर्जन में सफलता प्राप्त कर सकता है । कविता सामने आते ही बच्चे प्रसन्नता से उछलने लगें, नाचने गाने लगें और बोध ग्रहण के साथ उल्लसित होकर तादात्म्य स्थापित करने लगें, तभी कवि की सफलता है । जिस तरह कच्ची मूर्ति से मनोनीत मूर्ति का निर्माण किया जा सकता है, पिघले हुए मोम को चाहे जिस साँचे में अपेक्षित आकार दिया जा सकता है, उसी तरह बालकों के कोमल मन पर अच्छे संस्कारों के द्वारा उन्हें सुसंस्कृत किया जा सकता है । द्विवेदी जी इस कला में सिद्धहस्त हैं। उपर्युक्त सभी गुण उनके बाल-काव्य के अंतर्गत प्रायः दृष्टिगत होते हैं । ये कविताएं जहाँ एक ओर बच्चों का मनोरंजन करती हैं, वहाँ दूसरी ओर उनमें संस्कार-सिंचन का भी काम करती हैं । सुप्रसिद्ध विचारक डा० संपूर्णानन्द के शब्दों में - 'पं० सोहनलाल द्विवेदी ने यों तो सभी प्रकार की ऊँचे दर्जे की कविताएं लिखी हैं, जिनमें उनके भावों की गंभीरता तथा भाषा का प्रभुत्व प्रकट होता है, लेकिन बाल-साहित्य तो उनका खास क्षेत्र है । जो लोग इस बात को मानते हैं कि सद्विचारों का अंकुर बालकों में बचपन से ही उगना चाहिए, उन्हें द्विवेदी जी का कृतज्ञ होना चाहिए और उनकी कृतियों को अपनाना चाहिए ।[3] प्रसिद्ध बाल-साहित्यकार श्री नर्मदाप्रसाद खरे द्विवेदी जी की बालोपयोगी कविता की महत्ता, प्रतिपादित करते हुए कहते हैं, 'पं०सोहनलाल द्विवेदी को मैं बच्चों का महाकवि मानता हूं । ---- उन्होंने सच्ची निष्ठा और ईमानदारी के साथ जिन बालोपयोगी कविताओं की रचना की है, उनकी उदात्त भावना, हृदय को स्पर्श करने की अनूठी क्षमता तथा श्रेष्ठता के कारण ही मैं यह धृष्टता कर बैठा ।[4] प्रसिद्ध समीक्षक आचार्य हजारीप्रसाद द्विवेदी ने पं० सोहनलाल द्विवेदी की बाल-कविताओं की समीक्षा करते हुए प्रसंगवश पं० बनारसीदास चतुर्वेदी को एक पत्र में लिखा था, 'हिन्दी में बड़े-बड़े साहित्यकार तो हैं, किन्तु बच्चों के

माई-बाप तो केवल सोहनलाल जी ही हैं ।[5]

समीक्षकों के उपर्युक्त उद्धरणों से यह स्पष्ट हो जाता है कि द्विवेदी जी का, बाल-साहित्य, विशेषकर काव्य, के क्षेत्र में ऐतिहासिक महत्व रखता है । बाल-साहित्य के सशक्त पुरस्कर्ता होने के साथ ही, उन्होंने नवोदित बाल-साहित्यकारों का मार्ग प्रशस्त किया है । बाल-साहित्य का सर्जन करके उन्होंने न केवल युगीन आवश्यकता की पूर्ति की, अपितु बाल-साहित्य सर्जन के प्रति साहित्यकारों की लघुता ग्रंथि का उन्मूलन करते हुए उन्हें यथेष्ट प्रेरणा भी दी है ।[6] सरलतम शब्दावली का प्रयोग जो बाल-काव्य की सर्वसाधारण आवश्यकता समझी गई है, द्विवेदी जी ने अपनी एतद्विषयक कविताओं में उसका भरपूर प्रयोग किया है । किन्तु साथ ही विशेष उल्लेखनीय बात यह है कि उन्होंने नित्य नवीन ज्ञान प्राप्त करने की जिज्ञासापरक बाल-सुलभ कल्पनाओं का बाल-मानस के स्तर पर उतरकर सृजन किया है । वैसे कोई भी रचना निरुद्देश्य नहीं होती । राष्ट्रीय पुनर्जागरण एवं राष्ट्र के नवनिर्माण की बलवती भावना रखनेवाले द्विवेदी जी ने बाल-काव्य का सर्जन भी संस्कार सिंचन या राष्ट्रीय चरित्र-निर्माण के महद् उद्देश्य के अतिरिक्त जीवन में निर्भयता, दृढ़ संकल्प, स्वर्णिम अतीत के प्रति गौरव-भावना, राष्ट्र-प्रेम तथा वीरत्व के भावों को बाल-मानस में भरने के उद्देश्य से किया है । अतएव उनकी रचनाओं के उपदेशप्रधान होने की पूर्ण संभावना है । किन्तु बाल-मनोविज्ञान के सफल ज्ञाता द्विवेदी जी इस त्रुटि से अत्यन्त सावधानी के साथ प्राय: मुक्त रहे हैं । उन्होंने सोद्देश्य रचनाएं अवश्य लिखी हैं, किन्तु उपदेशात्मकता से वे प्राय: दूर रहे हैं । जहां उपदेश देना आवश्यक समझा गया है, वहां स्वयं बालक की मनोकामनाओं के माध्यम से या बड़े ही मनोरंजक ढंग से उक्त कार्य का निर्वाह किया गया है जिससे उनकी ये रचनाएं नीरसता एवं कोरे उपदेशों के बोझ से बोझिल नहीं हो पाईं । उनकी उक्त कविताओं में प्राय: बालमानसोचित रोचकता, सरसता एवं सरलता लबालब भरी हुई है ।

द्विवेदी जी के समस्त बाल काव्य का अध्ययन-अनुशीलन करने पर उसे प्रमुखत: पांच विभागों में विभक्त किया जा सकता है । ये हैं- (1) प्रकृतिपरक -

(2) नीति विषयक (3) जिज्ञासापरक (4) सर्व-साधारण विषयों से सम्बंधित और (5) राष्ट्रीय चेतना की जागृति एवं राष्ट्र-निर्माणपरक ।

प्रस्तुत अध्याय में द्विवेदी जी के बाल-साहित्य का राष्ट्रीय चेतना की जागृति के विशेष संदर्भ में अध्ययन-अनुशीलन अभीप्सित होने के कारण तथा अनावश्यक विस्तार से बचने के उद्देश्य से उक्त चारों विभागों के बाल काव्यों का उल्लेख मात्र किया जा रहा है ।

(1) प्रकृतिपरक :

द्विवेदी जी के प्रकृतिपरक बाल-गीत 'बाँसुरी', 'दूधबताशा', 'शिशुभारती', 'बालभारती', 'हँसो हँसाओ', 'शिशुगीत' आदि प्राय: समस्त प्रसिद्ध पुस्तकों में परिलक्षित किये जा सकते हैं । प्रकृति के प्राय: सभी तत्वों पर उन्होंने छोटे-बड़े गीत लिखे हैं । कभी 'ओस', ~~नभमंडल~~ 'बादल', '~~बसंत~~ बरसात', 'चन्दामामा', 'तारे', 'चाँदनी' आदि शीर्षकों से नभोमंडल से सम्बंधित तत्वों पर लिखा तो कभी 'वसंत', 'पतझड़', 'वर्षा', 'ग्रीष्म', 'शरद' आदि षडऋतु विषयक अनुभूतिपरक गीत लिखे । कभी 'फूल', 'कोंपल', 'उग रही घास', 'नीम का पेड़', 'आमों का गीत' प्रभृति प्रकृति के विविध फलफूल से सम्बंधित गीत लिखे गये तो कभी 'मोर', 'कोयल', 'कबूतर', 'तितली रानी', 'चिड़ियाँ', 'मेंढक' आदि प्रकृति पर निर्भर रहनेवाले आजाद परिंदों पर लिखा गया । इस तरह कवि ने प्रकृति के वसुधा एवं वातावरण के समस्त परिवेश को विशेषकर बाल-सुलभ तत्वों को, चित्रित किया है । प्रकृति के इन तत्वों के माध्यम से कवि ने बालक की जिज्ञासावृत्ति तथा सौंदर्यवृत्ति को संतुष्ट करने का प्रयास तो किया ही है, साथ-साथ बालकों की चेतना को जागृत करते हुए उन्हें जीवन में नित्य प्रफुल्लित रहकर अपने प्रमाद को छोड़ने का आदेश दिया है ।

(2) नीति विषयक :

प्रकृति के अतिरिक्त नीतिविषयक गीत भी उन्होंने पर्याप्त मात्रा में लिखे हैं । ये गीत भी उनकी उपरि निर्दिष्ट प्राय: सभी रचनाओं में प्राप्त होते हैं । 'प्रार्थना',

`जब बोलो तब हंसकर बोलो', `फूल और कांटे', `कर्मवीर', `माई के लाल', `अगर बड़े तुम बनना चाहो', `छाया', `मुस्कानों से भर दो घर-वन', `खंडहर', `कलम', `कुतुबमीनार', `मीठे बोलो', `प्यारे प्यारे तारे चमको', प्रभृति विविध विषयों पर लिखे उनके गीतों के अतिरिक्त `दस कहानियाँ', `सात कहानियाँ', `पाँच कहानियाँ' आदि काव्य-पुस्तकों के माध्यम से भी उन्होंने सरस बाल-गीत लिखे हैं। सामान्यत: ऐसे नीतिविषयक गीत प्राय: शुष्क, नीरस एवं उपदेशों के बोझ से बोझिल होते हैं। एतदर्थ बालक इन गीतों को पढ़ना प्राय: पसन्द नहीं करता। किन्तु द्विवेदी जी के इन गीतों में यह बात नहीं है। द्विवेदी जी बालमनोविज्ञान के अच्छे ज्ञाता होने के कारण वे उपदेशक नहीं, मार्गदर्शक बनकर आते हैं। वे बच्चों के वात्सल्यपूर्ण जनक बनकर आते हैं। नीतिविषयक इन गीतों में वे कभी बच्चों की मनोकामनाओं के माध्यम से स्वयं बच्चों के द्वारा कहलवाकर अपनी बात कह जाते हैं तो कभी उत्साहवर्धिनी प्रेरणा के रूप में व्यक्त करते हैं।

(3) जिज्ञासापरक :

इसके उपरान्त द्विवेदी जी ने कुछ जिज्ञासापरक गीत भी लिखे हैं जो `बाँसुरी', `शिशुभारती', `बालभारती', `शिशुगीत' आदि पुस्तकों में प्राप्त होते हैं। `तुम क्या करते हम क्या करते', `सपने में', `कौन', `क्यों', `परियों का देश' आदि गीतों का विशेष उल्लेख किया जा सकता है। ऐसे गीतों के माध्यम से कवि ने एकाधिक प्रश्न पूछकर बाल-मानस की जिज्ञासावृत्ति को जागृत करके एक विशिष्ट परिस्थिति में अपनी निश्चयात्मिका बुद्धि का उपयोग करने की सीख दी है।

(4) सर्वसामान्य विषयों से सम्बंधित :

कुछ सामान्य विषयों पर भी कतिपय गीत लिखे गये हैं। इस सन्दर्भ में `चल बे घोड़े', `नटखट पाँडे', `ईंटों की रेल', `बाजों के बोल', `पाठशाला', `मेरी गुड़िया', `चल रे मटके टम्मक टूँ', `चाबी का गुच्छा मजेदार' `लोरी', `पतंग' आदि अनेक गीतों का उल्लेख किया जा सकता है। इन गीतों के माध्यम से कवि ने मनोरंजन के साथ-साथ

आकस्मिक परिस्थितियों में बच्चों को किस तरह अपनी मेधा का उपयोग करते हुए अपना मार्ग निकालना चाहिए यह सिखाया है ।

(5) राष्ट्रीय चेतना की जागृति एवं राष्ट्र-निर्माण से सम्बंधित :

अन्त में राष्ट्रीय चेतना की जागृति एवं राष्ट्र निर्माण के विशेष संदर्भ में उन्होंने जो अनेक गीत लिखे हैं उनका सविस्तार अध्ययन-अनुशीलन किया जा रहा है । इन गीतों के विशेष ~~स्तंभ की~~ को पुन: तीन प्रमुख शीर्षकों में विभक्त किया जा सकता है । ये हैं - (अ) स्वर्णिम अतीत के प्रति गौरव भावना एवं मातृभूमि के प्रति प्रेम के गीत, (ब) राष्ट्र के प्रति कर्तव्य-कर्म की प्रेरणा के गीत और (क) राष्ट्र की कल्याण कामना के गीत ।

(अ) स्वर्णिम अतीत के प्रति गौरव भावना एवं मातृभूमि के प्रति प्रेम के गीत :

पराधीनकालीन भारत की करुणाजन्य स्थिति से विचलित कवि का मानस अत्यंत वेदना की अनुभूति करते हुए माँ भारती के ताप-क्लेशों को शीघ्रातिशीघ्र दूर करने की कामना करता है । कवि की राष्ट्रीय रचनाओं का अध्ययन अनुशीलन करते समय यह दृष्टिगत किया जा चुका है कि नवयुवकों के हृदय में माँ-भारती के प्रति ~~अनन्य~~ आसक्तिजन्य स्नेहभाव उत्पन्न करने के निमित्त इसी प्रविधि को अपनाया गया है । अर्थात् भारत की सांस्कृतिक गरिमा का गौरव गान करते हुए कवि माँ-भारती के प्रति प्रेम और श्रद्धा का भाव जागृत करने की चेष्टा करते हैं । बालक राष्ट्र की निधि है और मानव-जाति की सजीव काव्य कृति । एतदर्थ बालक के मानस में उक्त भाव के उद्रेक के लिए अतीत भारत का गौरवगान करते हुए कवि कहते हैं -

जन्मे जहाँ थे रघुपति,
जन्मी जहाँ थी सीता,
श्री कृष्ण ने सुनाई
वंशी पुनीत गीता ।

गौतम ने जन्म लेकर
जिसका सुयश बढ़ाया,
जग को क्या दिखाई
जग को दिया दिखाया ।'[7]

तथा- 'गूँजा वेदों का यहीं गान,
जिससे दुनिया को मिला ज्ञान
निशदिन गुण गाते अन्य देश
जय जय स्वदेश ।
जय जय स्वदेश ।।'[8]

राम,कृष्ण ,गौतम के अतिरिक्त युधिष्ठिर,अर्जुन, अभिमन्यु, एकलव्य , द्रोणाचार्य आदि वीर आर्यपुत्रों की सन्तानें होने के कारण हममें उन्हीं का रक्त प्रवाहित होता है यह कहकर उनकी-सी शक्ति और भक्ति लेकर पुन: भारत के भाल को चमका देने की हमें अमर प्रेरणा प्रदान करते हुए वे कहते हैं -

'उनका हम में रक्त बह रहा
उनकी ही हैं हम सन्तान,
हममें उनकी शक्ति छिपी है
हमको है उनका अभिमान ।
उनका नाम याद कर करके
कण-कण को दमका देंगे,
एक बार फिर सब मिल करके
भारत को चमका देंगे ।'[9]

स्वाधीनता के लिए उत्प्रेरित करते हुए कवि यह इंगित करना चाहते हैं कि अतीत में हम स्वाधीन ही थे और परतंत्रता या संकट की परिस्थितियों में राष्ट्र की सुरक्षा के हित हम सोत्साह समरांगण में अपना पुनीत कर्तव्य समझकर

प्राणार्पण के लिए सदैव तत्पर रहते थे । यथा-

'रहे कभी हम नहीं आज तक
किसी दूसरे के आधीन
हम थे शासक स्वयं देश के
हम राजा थे धर्म-धुरीण
समर भूमि के लिए सदा ही
हम में भरा रहा उत्साह
कुरुक्षेत्र की पुण्यभूमि में
सेनाओं का बहा प्रवाह ।'[10]

इसी प्रकार के भाव 'धन्य हमारे भाग्य', 'भारत', 'राष्ट्रगीत', 'गौरवगीत' आदि अन्य गीतों में भी दृष्टिगत किये जा सकते हैं । अतीत के गौरव की झाँकी कराते हुए कवि बालकों में मातृभूमि के प्रति ममत्व उत्पन्न करने का प्रयास करते हुए कहते हैं,

'वह युद्धभूमि मेरी
वह बुद्धभूमि मेरी
वह मातृभूमि मेरी
वह जन्मभूमि मेरी ।'[11]

हमारा राष्ट्र कृषिप्रधान है । अत: उसका असली स्वरूप ग्रामीण किसानों व मजदूरों में दृष्टिगत होता है । भारतीय संस्कृति का रूप भी गाँवों में ही दृष्टिगत होता है । इन्हीं किसान व मजदूरों की मेहनत पर, ताकत पर आधुनिक भारत के शहर पलते रहते हैं कहकर कवि गाँवों के प्रति बालकों का ध्यान आकर्षित करते हैं । इस तरह राष्ट्र की धरती के प्रति आसक्ति बढ़ाने का यत्न करते हैं । यथा-

यहाँ के भोले भाले लोग,
~~सच्च-सच्च~~ छल-कपट का है यहाँ न रोग,

सदा सच्चाई की है बान
आन पर दे देते हैं जान ।
यहीं बसते हैं दीन किसान
उगाते हैं जो गेहूं धान,
'कि जिन पर निर्भर सकल जहान,
पालते हैं जो जग के प्राण,
नगर जीते जिन पर दिन रात,
यही अपना प्यारा देहात ।

इन्हीं देहातों में अनजान,
बसे भारत के कोटि किसान,
हमारी जननी की सन्तान,
इन्हीं में फैला हिन्दुस्तान,
छिपा है इनमें बल अज्ञात,
यहीं अपना प्यारा देहात ।'[12]

एक बार रागात्मक अनुरक्ति उत्पन्न हो जाने पर मातृभूमि के लिए आत्मसमर्पण तक का त्याग भी संभव हो सकता है । कवि इस तथ्य की ओर संकेत करते हुए बालकों को उत्प्रेरित करते हैं :-

'हम में अपने कुल-गौरव का
भरा रहा इतना अभिमान,
मान चले जाने के पहले
हमने सदा दे दिये प्राण ।'[13]

इस तरह भारतीय धर्म व संस्कृति के प्रतिनिधि राम, कृष्ण तथा भगवान बुद्ध के अतिरिक्त अर्जुन, अभिमन्यु, युधिष्ठिर प्रभृति राष्ट्र के वीर सपूतों की सन्तानों का उल्लेख करते हुए कवि उक्त रचनाओं के द्वारा बालक को उत्साहपूर्ण प्रेरणा प्रदान

करते हुए यह सूचित करने का यत्न करते हैं कि जिस तरह उन्होंने अपने जीवन में मातृभूमि की ममता को तथा समाज व जाति के कुल-गौरव को ही प्राधान्य देते हुए उससे रागात्मक सम्बंध स्थापित किया और आवश्यकता पड़ने पर उसी की सुरक्षा के हेतु जीवित रहे तथा सहर्ष सर्वस्व समर्पित करने का यत्न करते रहे, उसी तरह आज पराधीनावस्था में माँ की दुरवस्था को ध्यान में रखकर उसके प्रति ममत्व स्थापित करते हुए उसी के लिए जीकर जन्म को सफल करना चाहिए। आखिर भारत का यश बढ़ाना ही तो हमारा कर्तव्य होना चाहिए। कृषि प्रधान देश में किसान, मजदूर आदि, जो भोले-भाले हैं और जिनकी मेहनत पर ही समस्त देश की प्रगति निर्भर है, उनकी सुरक्षा, उनकी यातनाओं को समझते हुए उनके प्रति ममत्व स्थापित करना यही युग की आवश्यकता है।

(ब) राष्ट्र के प्रति कर्तव्य-कर्म की प्रेरणा के गीत :

जैसा कि लक्ष्य किया जा चुका है कि किसी भी व्यक्ति में मातृभूमि के प्रति रागात्मक अनुरक्ति का होना परम आवश्यक है। बिना इसके वह त्याग करने को तत्पर नहीं होता। किन्तु इसके अतिरिक्त उसमें साहस व हिम्मत का होना भी उतना ही आवश्यक है। इसकी अनुपस्थिति में त्याग करने की उसकी भावना कार्य में परिणत नहीं हो सकती। तदर्थ साहस एवं उत्साह की अनिवार्यता पर बल देते हुए कवि बालकों को कर्तव्य-कर्म की ओर प्रेरित करते हैं। यथा-

मत सोचो कोई साथ नहीं।
कुछ अस्त्र-शस्त्र हैं हाथ नहीं।
उत्साह उमंगों में पागे,
तुम बढ़ो अकेले ही आगे।[14]

एक प्रयाण-गीत में प्राय: इसी भाव को व्यक्त करते हुए कवि कहते हैं -

तुम वीर कीसन्तान हो
तुम वीरता से काम लो,
रणधीर की सन्तान हो
तुम धीरता से काम लो ।
साहस करो हिम्मत करो
आगे बढ़ो चलते चलो,
जब तक न पहुँचो लक्ष्य पर
तब तक नहीं विश्राम लो ।`[15]

`पथ-गीत' शीर्षक कविता में आगंतुक विपत्तियों को ललकारते हुए कर्तव्य पथ पर मृत्यु का भी सामना करने का आह्वान करते हैं ।[16] - कर्तव्य का भान कराने के लिए कवि बालक को नित्य कार्य करने की प्रेरणा देते हुए उसके लिए उमंगपूर्ण लगन उत्पन्न करना चाहते हैं । बिना मानसिक लगाव के कर्तव्य-कर्म का यथेष्ट आनंद प्राप्त नहीं हो सकता । उत्साह, उमंग और लगन के साथ राष्ट्रीय कार्य करने की प्रेरणा देते हुए वे कहते हैं -

`तुमने पहले किया बहुत कुछ
अब भी कर सकते इतना ।
किन्तु शर्त है एक, न बैठो,
पल भर भी न विराम करो ।
नवजीवन उत्साह नया हो,
नई लगन ले काम करो ।
उठो उमंगें नई, तरंगें नई
लिये बढ़ नाम करो ।
नवजीवन उत्साह नया हो
नई लगन ले काम करो ।`[17]

इसी प्रकार के प्रेरणा-प्रधान भाव `उठो-उठो`, `आगे आओ`, `चले चलो`,

'तुम वीर बनो' आदि कविताओं में भी दृष्टिगत किये जा सकते हैं।

राष्ट्रीय नवजागरण व निर्माण के हेतु द्विवेदी जी, बालक हो या नवयुवक, सभी को राष्ट्रीय कर्म के लिए निरंतर उत्प्रेरित करते रहते हैं। नवयुवकों को उत्प्रेरित करने की कवि की अनेकविध चेतना तथा विचार समष्टि को उनकी राष्ट्रीय रचनाओं का अध्ययन करते हुए पंचम अध्याय में प्रस्तुत किया गया है। प्राय: उन्हीं प्रविधियों तथा युक्तियों को बाल-मानस को प्रेरित करते समय उपयोग में लाते हैं। प्रत्यक्ष प्रेरणा के अतिरिक्त 'बापू', 'वीर जवाहर' प्रभृति नेताओं के जीवन-प्रसंगों एवं उनके समग्र कर्तृत्व के उद्धरणों के द्वारा भी कवि संप्रेरित करते हैं। एक वस्त्र धारण करने की गांधी जी की भीष्म-प्रतिज्ञा के प्रसंग का उद्घाटन करते हुए कवि कहते हैं -

'लिया अचल प्रण गांधी जी ने
उस दिन वहीं सबेरे
जब तक यह दरिद्रता मेरे
दुखी देश को घेरे।
तब तक मैं भी कभी न अपना
सारा बदन ढकूँगा,
एक लँगोटी लगा रहूँगा,
असिव्रत यही गहूँगा।'[18]

बापू के जागरूक व्यक्तित्व एवं कर्तृत्व से अभिभूत कवि द्विवेदी जी उनका यशोगान करते हुए उनकी युगीन महत्ता को प्रतिपादित करने का यत्न अपने समस्त काव्य में करते आये हैं। उनकी राष्ट्रीय जागरण व निर्माणपरक रचनाओं का अनुशीलन करते समय विगत अध्यायों में उक्त तथ्य को प्रकाशित किया जा चुका है। आदर्श नेता कैसा होना चाहिए उसका सरल शब्दावली में ही सही भव्य चित्र अंकित करते हुए बाल-मानस को इस तरह प्रेरित करते हैं, -

देश प्रेम का मंत्र सुनाकर
जिसने हमें जगाया है,
सत्य अहिंसा का बल देकर
भय को दूर भगाया है ।
लाख-लाख दु:ख आने पर
जिसने न कभी निज पथ छोड़ा
प्राणों को भी चढ़ा दिया
जिसने न कभी निज प्रण तोड़ा ।
जिसने जीता क्रोध प्रेम से
दुर्गुण को जीता गुण से,
सभी असंभव को संभव है
बना दिया अपनी धुन से ।' [19]

बालक हो या नवयुवक, वह अपने जीवन को उदात्त व श्रेष्ठ कोटि का बनाने के उद्देश्य से अपने मानस-पटल के सम्मुख निजी चिन्तन एवं संस्कारों के अनुरूप एक आदर्श नेता का मनोनीत रूप निर्धारित करता हुआ उसी के आदर्शों पर तथा उसी के द्वारा निर्दिष्ट पथ पर चलने में सुविधा का अनुभव करता है । सुविधा के साथ ही ही उससे प्रेरणा भी प्राप्त करता है । इस- मनोवैज्ञानिक तथ्य का भलीभाँति उपयोग करते हुए कवि बालक, जो कि राष्ट्रीय निधि है, के सम्मुख ऐसे ही आदर्श-नेता बापू का भव्य चित्र उपर्युक्त पंक्तियों में अंकित करने का प्रयास करते हैं । यद्यपि क्रोध को प्रेम से और दुर्गुणों को गुण से जीतना साधारण मनुष्य के लिए असंभव-सा है तथापि बापू ने इसे संभव कर दिखाया है । हिंसक शस्त्रास्त्रों के सम्मुख सत्य और अहिंसा के आत्मिक बल पर अत्यंत निर्भीकता के साथ जूझना यदि असंभव नहीं तो दुष्कर अवश्य है । बापू ने अनेकविध झंझावातों को सहते हुए भी इसे सत्य सिद्ध करके दिखाया है । ऐसा आदर्श नेता आधुनिक युग में और कौन हो सकता है ? संभवत: इसीलिए कवि ने बालकों के सम्मुख ऐसे आदर्श नेता बापू का चित्र अंकित

करके उन्हें राष्ट्र-निर्माण के पुनीत कार्य करने की प्रेरणा प्रदान की है । कवि को सम्पूर्ण विश्वास है कि बापू के द्वारा निर्दिष्ट आदर्शों पर चलकर राष्ट्र का मनवांछित कल्याण किया जा सकता है ।[20] गांधी जी के जीवनादर्शों को बाल-मानस में भलीभांति संप्रेषित करने तथा उनके द्वारा निर्दिष्ट मार्ग का अनुसरण करके देश की शान बढ़ाने के उद्देश्य को केन्द्र में रखकर द्विवेदी जी ने बच्चों के बापू नामक एक छोटी-सी पुस्तक लिखी है[21] जिसमें अत्यन्त प्रसन्नता के साथ बच्चे बापू द्वारा निर्दिष्ट मार्ग का अनुसरण करने को लालायित दिखाये गये हैं ।[22] बापू के अतिरिक्त बच्चों के प्यारे नेहरू चाचा के भी कतिपय जीवन प्रसंगों का उद्घाटन करते हुए कवि ने बालकों को अविस्मरणीय प्रेरणा प्रदान की है और यह निर्दिष्ट करने का यत्न किया है कि मातृभूमि की पराधीनकालीन करुणापूर्ण मूर्ति को देखकर स्वाभिमानी जवाहरलाल 'आराम हराम है' का जीवन मंत्र लेकर किस तरह गांधी जी के साथ राष्ट्रीय कर्म में संलग्न हो गये । राष्ट्र के चरणों में सर्वस्व समर्पित कर देनेवाले जवाहरलाल के संदर्भ में कवि कहते हैं -

भारत पर थे शासन करते,
भारतवासी भूखों मरते ।
भारतमाता थी बिलखाती,
बड़े बड़े आंसू टपकाती ।

नेहरू चाचा थे अभिमानी,
तभी यही धुन मन में ठानी-
माता का दुःख दूर करूंगा,
दुनिया को मजबूर करूंगा ।

\+ \+ \+

गांधी जी को समझो काया,
नेहरू जी को उनकी छाया।

\+ \+ \+

नेहरू चाचा का यह सपना,
हरा भरा भारत हो अपना ।
आपस का मतभेद मिटायें
सब हिल मिलकर शक्ति बढ़ावें,
काम करें, आराम हटायें
तब स्वराज्य का मजा उठायें ।' [23]

बापू की तरह कवि को भी पूर्ण विश्वास हो गया है कि चरखा ही भारतीय जन जागरण एवं निर्माण का एक मात्र सरलतम एवं सहज उपलब्ध होनेवाला साधन है । एतदर्थ कवि बापू और बच्चे के नाट्यात्मक संवाद के माध्यम से उनकी महत्ता प्रतिपादित करते हुए राष्ट्र के बालकों को किस तरह प्रेरणा प्रदान करते हैं यह दृष्टव्य है - यथा -

'मुन्नू । चरखे से जागेगा
सोया देश हमारा,
चरखे से मिट जायेगा
भारत का संकट सारा ।
तो मैं भी चरखा कातूंगा,
रोज नेम से बापू ।
तुम सा ही सुंदर कातूंगा
सूत प्रेम से बापू ।' [24]

तथा- चरखा प्यारा, चरखा प्यारा
यह है भारत का रखवारा,
मैं भी नित चरखा कातूंगा
जिससे हो कल्याण हमारा ।' [25]

यहाँ एक बात स्पष्ट कर देना आवश्यक प्रतीत होता है कि कवि चाहे नीति की बात कहते हों, चाहे बच्चों को प्रेरणा प्रदान करते हों, वे प्राय: उपदेशक बनकर नहीं, वे बच्चों के अपने कवि बनकर स्वयं अपने को उसमें सम्मिलित करके बच्चों से ममत्वपूर्ण तादात्म्य स्थापित करने का सफल यत्न करते हैं। तभी तो उनके बाल-काव्य में अत्यधिक रोचकता एवं प्रभावान्विति दृष्टिगत होती है। साथ ही वह अनावश्यक उपदेशों के बोझ से मुक्त रहता है।

(क) राष्ट्र की कल्याण-कामना के गीत :

स्वतंत्रता-प्राप्ति के क्रांतिकारी युग में एक ओर जहाँ राष्ट्र के समस्त युवक नर-नारी स्वतंत्रता की कामना करते हुए राष्ट्र-यज्ञ में मनसावाचाकर्मणा सम्मिलित होने का यत्न कर रहे हों, वहाँ राष्ट्र का वीर बालक शांत कैसे रह सकता है ? अपने आसपास के कुछ विहग-शावकों का स्वातंत्र्यपूर्ण जीवन देखकर बालक भी स्वतंत्र होने की अपनी अदम्य कामना किस तरह व्यक्त करता है, यह 'अगर कहीं मैं तोता होता' शीर्षक काव्य में भलीभाँति दृष्टिगत होता है। यथा-

'अगर कहीं मैं तोता होता ?
तो न बंद पिंजड़े में होता।
पिंजडा छोड़ तुरत उड जाता
पिंजडा तोड तुरत उड़ जाता
कभी नहीं मैं कुछ भी खाता,
भूखा रह रहकर मर जाता,
रहकर दास न सुख से सोता,
आजादी को कभी न खोता।'[26]

चिड़ियों के स्वतंत्र जीवन को दृष्टिगत कर वह बोल उठता है -

'कितना अच्छा इनका जीवन।
आजाद सदा इनका तन-मन।
+ + +

कितना स्वतंत्र इनका जीवन ?
इनको न कहीं कोई बन्धन ।
मैं भी इनका जीवन पाऊँ
जी होता चिड़िया बन जाऊँ ।[27]

विगत पृष्ठों में यह निर्दिष्ट किया जा चुका है कि कवि अपनी बात दो माध्यमों से करते हैं । कभी वे संवेदनशील बालक की मनोकामना के रूप में स्वयं बालक के मुख से अपनी बात कहलवाते हैं, तो कभी स्वयं कवि अपनी कामना अत्यन्त रोचकता के साथ व्यक्त करते हैं । राष्ट्र की स्वतंत्रता-प्राप्ति एवं निर्माणमूलक कल्याण-कामना को व्यक्त करने के लिए कवि ने उभय माध्यमों को अपनाया है । बालक स्वयं प्रभु से प्रार्थना करते हुए हीरे-मोती, धन-सम्पत्ति आदि की कामना करने की अपेक्षा संतप्त देशवासियों के ताप-क्लेशों को दूर करने की करुणामय दृष्टि प्रदान करने की कामना करता है, जिसे कवि की देशप्रेम की चेतना का द्योतक कहा जा सकता है ।[28]

बालक की तरह यदि राष्ट्र का प्रत्येक व्यक्ति ऐसी कामना करने लग जाय तो राष्ट्र में कोई निराधार ~~व्य~~ और दु:खी नहीं रहेगा । बालक केवल इस प्रकार की कामना व्यक्त करके ही संतुष्ट नहीं होता है । वह तो संतप्त जीवों के दु:खों को दूर करने के निमित्त ~~[illegible]~~ दयापूर्ण आचरण करना पसन्द करता है । तभी तो वह वैभव-विलासयुक्त जीवन की अपेक्षा पूर्ण निरीह मनोवृत्ति के साथ समस्त देशवासियों के प्रति रागात्मक अनुरक्ति स्थापित करता हुआ निश्छल त्याग करने की कामना व्यक्त करता है । यथा -

वैभव-विलास की मन में
हो लालसा न मेरे
अनुराग त्याग से हो
यों मन सुधार दो ।

अपनी न जय चाहूं मैं
जय मातृभूमि की हो,
यह देश-भक्ति मन में
वह प्रेम-प्यार दो ।[29]

देशवासियों के लिये मर मिटने तक की तमन्ना रखता हुआ वह प्रार्थना करता है-

मुझे आग दो देश का हित करूं मैं
मुझे त्याग दो देश के लिए हित मरूं मैं ।[30]

माँ भारती के परतंत्रतामूलक दु:खों से अत्यधिक दु:खी होकर वह प्रभु से प्रार्थना करता है -

हे भगवान् ।
दया निधान ।।
मुझको दो इतना वरदान,
चाहे दुख हो,
चाहे सुख हो,
रहे देश का हरदम ध्यान ।
बाधाओं में,
विपदाओं में,
धीरज धरूं बनूं बलवान् ।
तन मन वारूं,
जीवन वारूं,
भारत पर होऊं कुरबान ।[31]

सुखदु:खात्मक द्वन्द्वों में भी अहर्निश देश का, माँ भारती का ध्यान रखने की

और आवश्यकता पड़ने पर सर्वस्व समर्पण करने की बालक की कामना को व्यक्त करके कवि हमें 'वंदिनी माँ को न भूलो, राग में जब मत्त भूलो' वाली उसी भावना की ओर संकेत करते हैं जिसे वे नवयुवकों को सदैव प्रदान करते आये हैं। इससे यह व्यंजित होता है कि कवि का मन अहर्निश माँ की कल्याण-कामना ही करता रहता है और उसके दुख से उनका अन्तर्मन अत्यधिक व्यथित हो जाता है। इसी प्रकार के भाव 'मैं क्या चाहता हूँ', 'विजय मुकुट', 'प्रयाण-गीत(*March - Song*) आदि गीतों में प्राय: दृष्टिगत होते हैं।[32]

गरीबी ही सब दु:खों एवं विभीषिकाओं का मूल कारण है यह समझकर देश की पीड़ित जनता के ताप-क्लेशों से व्यथित कवि उसकी कल्याण-कामना करते हुए बाल-सुलभ कल्पना करके बालक के माध्यम से यहाँ तक कह देते हैं कि अगर कहीं मैं पैसा होता तो -

'जो करते दिन रात परिश्रम,
उनके पास नहीं होता कम।
रहता दुष्ट जनों से न्यारा
मैं बनता सुजनों का प्यारा।
व्यर्थ विदेश नहीं मैं जाता,
नित स्वदेश ही में मंडराता,
भारत आज न ऐसा रोता,
अगर कहीं मैं पैसा होता।'[33]

कवि के अनुसार भारत की गरीबी का मूल कारण देश का धन विदेशों में चला जाना ही है। तभी तो वे देश के धन को स्वदेश में ही रखने की निजी अभिलाषा उक्त पंक्तियों में व्यक्त करते हैं। साथ ही वे गरीबों में ही धन-वितरण की व्यवस्था पसन्द करते हैं। सच्चे अर्थों में वे समाजवाद लाना चाहते हैं। समाजवाद के सिद्धान्त को वे कितनी सरल शब्दावली में और साहजिक रूप में व्यक्त करते हैं,

और बाल मनोविज्ञान के अनुरूप कथन को रोचक भी बनाते हैं।

'उमंग' नामक कविता तो पूर्णतया राष्ट्र की कल्याण-कामना की भावना से परिपूर्ण है। प्रस्तुत काव्य में बालक की विभिन्न उमंगों को प्रस्तुत करते हुए उपर्युक्त कविता की विचार-सरणि का अनुगमन किया गया है -

'कंजूसों सा मैं न उसे
रखता ताले में करके बन्द,
मेरा धन सबका धन होता
तो कितना आता आनन्द।'[34]

तृतीय पंक्ति में गांधी जी के ट्रस्टीशिप के सिद्धान्त का समर्थन है। प्रस्तुत सिद्धान्त की मूल भावना को विगत सप्तम् अध्याय में प्रस्तुत किया जा चुका है। एतदर्थ यहाँ इसका संकेत ही पर्याप्त समझा जा रहा है। बालक आगे कल्पना करता हुआ कहता है कि- 'यदि वह रण का सेनानी होता' तो -

'मातृभूमि पर कभी घुमड़ते
जब बैरी चढ़ मनमानी
सभी हिचकते होते जब
करने को शीशदान अपना,
मैं कर अपना शीशदान
पूरा करता माँ का सपना।'[35]

और 'यदि वह चित्रकार होता' तो वह राष्ट्र के ऐक्य का अखंडित चित्र इस तरह अंकित करता -

तो मैं चित्र बनाता उस
माता का जिसके पुत्र सभी
एक साथ हिल मिल रहते
जानते न होना अलग कभी।'[36]

कवि यद्यपि राष्ट्रीय ऐक्य के लिए लालायित हैं तथापि उनका चिन्तन निर्धारित सीमाओं में आबद्ध नहीं है। एतदर्थ वैश्विक ऐक्य की वांछना करते हुए विश्वबंधुत्व का भाव बालक की मनोकामना के द्वारा व्यक्त करते हुए वे कहते हैं -

'चीनी हो या जापानी,
ईरानी या तुर्किस्तानी।
अमरीकन या इंग्लिस्तानी
या हम सब हों हिन्दुस्तानी।
हैं एक देह, हैं एक प्राण,
हम सब समान, हम सब समान।'[37]

आदर्शवादी कवि द्विवेदी जी राष्ट्र के किसी भी व्यक्ति को आदर्श सेनानी के रूप में देखना पसन्द करते हैं। आदर्श सेनानी के रूप में नवयुवकों में किन विशिष्ट गुणों की आवश्यकता है इस संदर्भ में विगत अध्याय में विचार किया गया है। बालक भी राष्ट्र की भावी निधि है। अत: उसे भी आदर्श बालक के रूप में कवि देखना चाहते हैं। 'माई के लाल' कविता में उसका चित्र अंकित करते हुए स्वयं कवि कहते हैं -

'जन्मभूमि जननी को दु:ख से
जो बन वीर छुड़ाता है,
वह माई का लाल कहाता
जग में सुयश कमाता है।'[38]

और- 'सज्जन उर के गल-हार बनो,
तुम न्याय-नीति पतवार बनो,
भारत के भव्य कुमार बनो
जननी की जय जय कार बनो।

तुम विजय दर्प उल्लास बनो,
बाधाओं के उपहास बनो,
जीवन के दिव्य विकास बनो,
तुम भारत के इतिहास बनो ।`[39]

भारतीय जन-समाज को जागृत करनेवाले और स्वतंत्रता-प्राप्ति के लिए सर्वस्व समर्पित करने की भावना को उद्बुद्ध करनेवाले राष्ट्र कवि द्विवेदी जी जब वास्तव में राष्ट्र को स्वतंत्रता प्राप्त होती है तब गरिमामय आनन्दोल्लास का अनुभव करते हुए `यह स्वतंत्रता का पहला दिन` नामक कविता में अपनी भावोर्मियों को इस तरह व्यक्त करते दृष्टिगत होते हैं । यथा -

`कैसा सुन्दर दिन आया है ?
आनंद दशोंदिशि छाया है ।
हमने तप का वर पाया है,
यह स्वतंत्रता का पहला दिन ।
तन में उमंग, मन में उमंग
छायी है जीवन में उमंग
मुख पर है सुख का चढ़ा रंग,
यह स्वतंत्रता का पहला दिन ।
घर आज हमारा अपना है
अब राज हमारा अपना है
सिरताज हमारा अपना है
यह स्वतंत्रता का पहला दिन ।[40]

स्वतंत्रता-प्राप्ति के महापर्व पर कवि को कल्पनातीत आनन्द की अनुभूति होती है किन्तु स्वाधीनता प्राप्ति ही कवि का एकमात्र लक्ष्य नहीं रहा है । कवि

केवल भावोर्मियों की तरंगों में बहकना ही नहीं जानते, वे तो अपना स्वप्न साकार करना चाहते हैं। भारत में सुख-शांति व्याप्त हो और अपना देश उसी अतीतकालीन गौरव को पुन: प्राप्त करे जिससे समस्त विश्व उस पर गौरव का अनुभव करे। स्वातंत्र्योत्तर कालीन इन आकांक्षाओं की अभिव्यक्ति वे 'तरल तिरंगा' कविता में इस तरह व्यक्त करते हुए दृष्टिगत होते हैं -

'इस तिरंग में रंगे हमारा
तन मन जीवन सारा,
यह स्वतंत्र भारत का जयध्वज
तरल तिरंगा प्यारा।
~~समस्त के~~ भारत के घर-घर में फहरे
यह विजय-ध्वज अपना
पूर्ण करे सुखमय स्वराज्य का
प्यारा प्यारा सपना।
रचे राष्ट्र वह जिस पर हो
न्यौछावर भूतल सारा
यह स्वतंत्र भारत का जय-ध्वज
तरल तिरंगा प्यारा।[41]

किन्तु यह स्वप्न तभी साकार हो सकता है जब कि हम सब सुख-दु:खात्मक द्वंद्वों ~~द्वंद्वों~~ को सहते हुए निर्मल व पुनीत मानव-प्रेम की गंगा में प्रवहमान होने की क्षमता प्राप्त करें। अर्थात् हम सब भेदभावों की दीवारों को तोड़कर निर्दोष भाव से ऐक्य प्रस्थापित करके जीने का यत्न करें।

यथा- 'हिल मिल कर साथ रहें हम,
दु:ख सुख सब साथ सहें हम,

नित विमल प्रेम की गंगा में,
घुल मिल कर साथ बहें हम ।
लायेंगे नवयुग का विहान ।
गायेंगे सब मिल नई तान ।
हम सब समान, हम सब समान ।[42]

निष्कर्ष :

पूर्ववर्ती पृष्ठों में द्विवेदी जी के बाल-साहित्य का जो अनुशीलन प्रस्तुत किया गया है, उसके आधार पर कहा जा सकता है कि इस कोटि में आनेवाली रचनाएं प्राय: सोद्देश्य हैं । कवि स्वयं अपने काव्य-कर्म को राष्ट्र-जागरण के एक समर्थ उपादान के रूप में मानता आया है । बाल-साहित्य की प्रथम उल्लेखनीय विशेषता बाल-मनोविज्ञान के सहज-स्वाभाविक अनुगमन की है । इसमें केवल भाषा और शैली की सरलता या सरसता ही नहीं है, भावनाओं की अभिव्यक्ति भी अवस्था के अनुरूप है । इसका उल्लेखनीय तथ्य यह है कि इतर बाल-साहित्य की तरह इन रचनाओं में एकमात्र रोचकता और कौतूहल की जागृति की चेतना नहीं दिखाई पड़ती । वस्तुत: बाल-सुलभ आशा-आकांक्षा, संकल्प और उल्लास की अनुभूति पूरी-पूरी अभिव्यंजना की क्षमता के साथ कवि ने प्रस्तुत की है जो कि इन रचनाओं की सर्वाधिक महत्वपूर्ण उपलब्धि है । तीसरे कवि की जिन मान्यताओं तथा राष्ट्रीय-सामाजिक संस्कारों की चर्चा पूर्ववर्ती विवेचन में की जा चुकी है, उनका यथोचित सन्निवेश इन रचनाओं में हुआ है । ऐसा करते हुए कवि ने देश की नयी पीढ़ी को संस्कार देने का प्रयास किया है । यही कारण है कि अनेक रचनाएं गांधीवादी विचारधारा तथा गांधी जी के व्यक्तित्व की अर्चना को लेकर लिखी गई हैं ।

अत: यह स्पष्ट है कि ये रचनाएं राष्ट्रीय जागरण की उपलब्धि ही नहीं, उसे आगे बढ़ाने की प्रेरणा को संजोये हुए हैं ।

सन्दर्भ-सूची :

1- श्री नर्मदाप्रसाद खरे, 'बच्चों के महाकवि' (शीर्षक) द्विवेदी अभिनंदन ग्रंथ, पृष्ठ 245 से उद्धृत।

2- प्रो0 राष्ट्रबन्धु, 'बालसाहित्य के जनक' (शीर्षक) द्विवेदी अभिनंदन ग्रंथ, पृ0 246 से उद्धृत।

3- श्री नर्मदाप्रसाद खरे, 'बच्चों के महाकवि' 'एक कवि: एक देश' पृ0244 से उद्धृत।

4- वही, पृ0 242

5- वही, पृ0 245 से उद्धृत।

6- देखिए- श्री नर्मदाप्रसाद खरे, 'श्री जयप्रकाश भारती' तथा प्रो0 श्री राष्ट्रबंधु के लेख, पृ0 243, 245 और 246 पर उनके विचार (द्विवेदी अभिनंदन ग्रंथ)

7- 'मातृभूमि' शीर्षक कविता, 'बांसुरी' सोहनलाल द्विवेदी, पृ0 5-6

8- सोहनलाल द्विवेदी, 'बांसुरी', जय स्वदेश, पृ0 8

9- ,, 'दूध बताशा' 'गौरवगीत' पृ0 61

10- ,, 'बांसुरी' 'अतीत गौरव' शीर्षक कविता, पृ0 87

11- वही, पृ0 7 ('मातृभूमि' (शीर्षक कविता)

12- सोहनलाल द्विवेदी, 'बांसुरी', 'देहात' शीर्षक कविता, पृ0 65-66

13- सोहनलाल द्विवेदी, 'बांसुरी', अतीत गौरव शीर्षक कविता, पृ0 88

14- ,, 'बांसुरी' 'तुम बढ़ो अकेले ही आगे' कविता, पृ0 100

x ~~15-- ,, 'बालभारती', 'नई लगन से काम करो' (शीर्षक) पृ0 8-9~~

15- सोहनलाल द्विवेदी, 'बालभारती', 'प्रयाणगीत (शीर्षक) पृ0 56

16- वही, बांसुरी, 'पथ गीत (शीर्षक) पृ0 98

17- वही, 'बालभारती', 'नई लगन से काम करो' (शीर्षक) पृ0 8-9

18- वही, 'अचल व्रत' शीर्षक कविता, 'बाल-भारती' पृ0 54-55

19- वही, 'बालभारती', 'हमारा नेता शीर्षक कविता, पृ0 3-5

20- सोहनलाल द्विवेदी, 'बाल-भारती', 'हमारा नेता' शीर्षक कविता, पृ0 5

21- 'बापू को एक बच्चा कैसे चाहता है, उसके मन में क्या-क्या उर्मीं उठती हैं, इस कविता में यही दिखाया गया है। ---विश्वास है, नन्हें बच्चे इसे पाकर बहुत खुश होंगे और बापू के बच्चे बनकर देश का सिर ऊँचा उठायेंगे।', 'बच्चों के बापू' एक शब्द से उद्धृत।

22- वही, पृ0 34

23- सोहनलाल द्विवेदी, 'नेहरू चाचा' पृ0 16, 24 और 27

24- ,, बच्चों के बापू, पृ0 6

25- ,, 'दूधबताशा', 'चरखा प्यारा', शीर्षक कविता, पृ0 57

26- ,, 'शिशुभारती', 'अगर कहीं मैं तोता होता' शीर्षक कविता, पृ0 34

27- ,, ,, 'बाल-भावना' शीर्षक कविता, पृ0 35

28- ,, 'बाँसुरी' 'बाल-विनय' शीर्षक कविता, पृ0 1

29- ,, ,, ,, पृ02

30- ,, ,, 'प्रार्थना' शीर्षक कविता, पृ0 4

31- ,, 'शिशुभारती', 'हे भगवान्' शीर्षक कविता, पृ0 2

32- ,, 'बाँसुरी', 'प्रयाणगीत, पृ0 97

33- ,, 'बाँसुरी', 'अगर कहीं मैं पैसा होता, कविता पृ0 55

34- ,, 'बालभारती', 'मैं उमंग' शीर्षक कविता, पृ0 18

35- वही, पृ0 22

36- वही, पृ0 20

37- सोहनलाल द्विवेदी, 'शिशुभारती' 'हम सब समान' कविता, मुख पृष्ठ पर लिखी कविता।

38- ,, 'दूध-बताशा', 'माँ के लाल' कविता, पृ0 50

39- ,, 'बाँसुरी', 'तुम भारत के इतिहास बनो' कविता, पृ0102

40- ,, 'बाल-भारती', 'यह स्वतंत्रता का पहला दिन' कविता-पृ0 10-11

41- सोहनलाल द्विवेदी, 'बाल-भारती', 'तरल-तिरंगा' कविता, पृ0 57-58

42- सोहनलाल द्विवेदी, 'शिशुभारती', 'हम सब समान' कविता, मुखपृष्ठ पर लिखी कविता ।